IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिन्दी–साहित्य के प्रसार प्रचार में पत्रकारिता का योगदान

डॉ0 यज्ञेश कुमार
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
चौ0 चरण सिंह वि0वि0मेरठ

शोध सारांश– हिंदी पत्रकारिता भारत में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। हिंदी पत्रकारिता का एक गौरवशाली इतिहास रहा है। इस पत्रकारिता के कई उतार चढाव भी देखने को मिलते रहे है। हिंदी पत्रकारिता का प्रारम्भ भारतेन्दु युग से होकर आधुनिक समय तक चल रहा है। हिंदी साहित्य भी पत्रकारिता से प्रभावित रहा है। इनेक पत्र पत्रिकाओं और हिंदी साहित्यकारों का इसमें योगदान रहा है। जो हिंदी साहित्य के प्रचार प्रसार में विशेष सहायक रहा है।

हिन्दी पत्रकारिता की कहानी भारतीय राष्ट्रीयता की कहानी है। हिन्दी पत्रकारिता के आदि उन्नायक जातीय चेतना, युगबोध और अपने महत् दायित्व के प्रति पूर्ण सचेत थे कदाचित इसीलिए विदेशी सरकार की दमन–नीति का उन्हें शिकार होना पड़ा था। उनके नृशंस व्यवहार की यातना झेलनी पड़ी थी। उन्नीसवीं शताब्दी में गद्य–निर्माण की चेष्टा और हिन्दी प्रचार आंदोलन अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियों में भयंकर कठिनाइयों का सामना करते हुए भी कितना तेज और पुष्ट था इसका साक्ष्य 'भारत मित्र' (सन् 1878 ई0) में (सार सुधा निधि 1879 ई0) और उचित वक्ता (सन् 1880ई0) के जीर्ण पृष्टों पर मुखर है। वर्तमान में हिन्दी पत्रकारिता ने अग्रेंजी पत्रकारिता के दबदबे को समाप्त कर दिया है। पहले देश विदेश में अग्रेंजी पत्रकारिता का दबदबा था लेकिन आज हिन्दी भाषा का झण्ड़ा चहुं ओर लहरा रहा है। 30 मई को हिन्दी पत्रकारिता दिवस के रूप में मनाया जाता है।

अंग्रेजी शासन काल मे भारतीय समाचार पत्रों की समस्याए समान थी। वे नया ज्ञान अपने पाठकों को देना चाहते थे साथ ही साथ समाज सुधार की भी भावनाओं का प्रचार प्रसार करना चाहते थे। इस कारण से नये–नये पत्र भी निकाले गये। उनके सामने यह भी समस्या थी कि वे किस भाषा में समाचार और विचार दें। समस्या थी, भाषा शुद्ध हो या सभी के लिए सुलभ हो। पूरे भारत में सर्वप्रथम अंग्रेजी भाषा को महत्व दिया जा

रहा था। इसी क्रम में भारतीयों ने अपनी अपनी भाषा को महत्व देना भी प्रारम्भ किया। हिन्दी भाषा प्रेमियों ने भी अपने प्रयासों को सार्थक रूप प्रदान किया।

हिन्दी पत्रकारिता का आंरभ बंगाल से हुआ और इसका श्रेय राजा राम मोहन राय को दिया जाता है। राजा राम मोहन राय ने ही सर्वप्रथम प्रेस को सामाजिक उद्देश्य से जोड़ा। भारतीयों के सामाजिक धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक हितों का समर्थन किया। समाज में व्याप्त अंधविश्वास और कुरीतियों पर प्रहार किये और अपने पत्रों के माध्यम से जन सामान्य में जागरूकता उत्पन्न की। राजा राम मोहन राय ने कई पत्र प्रारंम्भ कियें जिसमें महत्वपूर्ण है सन् 1816 में प्रकाशित 'बंगाल गजट'। 'बंगाल गजट' भारतीय भाषा का सर्वप्रथम समाचार पत्र है। इस समाचार पत्र के संपादक गंगाधर भट्टाचार्य थे। इसके अतिरिक्त राजा राम मोहन राय ने 'मिरातुल', 'संवाद कौमुदी', बंगाल हैराल्ड पत्र भी निकले और जनसामान्य में जागरूकता का प्रसार किया। 30 मई 1826 को कलकत्ता से पंडित जुगल किशोर शुक्ल के संपादन में निकलने वाले 'उदंत मार्तण्ड' को हिंदी का प्रथम समाचार पत्र माना जाता है।

इसी समय के आसपास हिंदी समाचार पत्रों ने भी खड़ी बोली गद्य के विकास में योगदान दिया। सन् 1826 ई0 में जुगल किशोर शुक्ल ने 'उदन्त मार्तण्ड' नामक पहला हिन्दी सामचार पत्र निकाला। इसी समय कुछ और हिन्दी समाचार पत्रों का प्रकाशन हुआ जिसमे राजा शिव प्रसाद का 'बनारस' अपनी सुव्यवस्थित भाषा शैली के लिए विशेष महत्वपूर्ण है। किंतु इसमें फारसी बहुल भाषा शैली थी, अतएव प्रतिक्रियास्वरूप हिंदी के विद्वानों ने सन् 1850 में 'सुधारक' नाम का शुद्ध खड़ी बोली का पत्र निकाला इसके दो वर्ष पश्चात् आगरा से 'बुद्धिप्रकाश' नामक परिमार्जित खड़ी बोली का एक और पत्र निकाला जो सामाजिक दृष्टि से भी प्रगतिशील था। समाचार–पत्रों के प्रकाशन से खड़ी बोली गद्य का जनता में प्रचार हुआ।

सन् 1845 में राजा शिव प्रसाद ने हिन्दी के प्रति अपनी रूचि व्यक्त करने हेतु 'बनारस अखबार' का प्रकाशन कराया। इसकी भाषा देवनागरी लिपि में उर्दू थी, किंतु बीच–बीच में हिंदी के भी शब्द आ जाते थे। सम्वत् 1917 में राजा लक्ष्मण सिंह ने आगरा से 'प्रजाहितैषी' नाम का पत्र निकाला और उसमें अपने भाषा के आदर्श को प्रस्तुत किया। राजा शिव प्रसाद की उर्दू प्रधान शैली, और राजा लक्ष्मण सिंह की संस्कृत प्रधान गद्य शैली थी। इन दोनों के मध्यम मार्ग चुनने वाले थे– भारतेन्दु हरिश्चन्द्र। उनकी सरल हिंदी 'हरिश्चन्द्री हिंदी' कहलाई। उनका मध्यम मार्ग जन–भाषा और जनजीवन को लेकर चला। उन्होने 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' में अपनी भाषा के संबंध में लिखा हैः 'हिन्दी नई चाल में ढ़ली'। आचार्य शुक्ल ने 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' की गद्य

शैली की प्रंशसा करते हुए लिखा है–''हिन्दी–गद्य का ठीक परिष्कृत रूप पहले–पहल इसी चन्द्रिका में प्रकट हुआ है। जिस प्यारी हिन्दी को देश ने अपनी विभूति समझा, जिसकों जनता ने उत्कण्ठापूर्वक दौड़कर अपनाया, उसका दर्शन इसी पत्रिका में हुआ। यह नई, सुधरी हुई जनप्रिय हिन्दी का रूप था। इसमें भारतेन्दु की यह भाषा नीति छिपी हुई थी कि हिन्दी साहित्य को युगानुरूप और सशक्त बनाना है तथा नये युग की नई चेतना को हिन्दी साहित्य में अभिव्यक्त करना है।

भारतेन्दु के उदय के साथ ही हिन्दी साहित्य के नवजागरण काल के दर्शन होते हैं। इस युग में नवीन चेतना दिखाई पड़ी। युग की चेतना को जनता तक पहुॅचाने में इस युग के लेखकों ने अपूर्व सहयोग दिया। पत्र–पत्रिकाओं में लेख लिखकर इस युग के लेखकों ने जनता तक आधुनिक युग में उद्भूत जनसंस्कृति का प्रचार किया और इसीलिए अब गद्य का विविधमुखी विकास होने लगा।

भारतेन्दु नवीन जागरण काल के नवीन जनजागृति के अग्रदूत थे। उन्होने हिंदी भाषा और साहित्य के निर्माण एवं विकास में बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया।

विशेषकर गद्य साहित्य का विकास करने के लिए उन्होने कई पत्रिकाएॅ निकाली। सन् 1867 में 'कविवचन सुधा' सन् 1876 ई0 में 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' का प्रकाशन हुआ। 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' के द्वारा भारतेन्दु जी ने हिंदी की नई शैली की नींव डाली। भारतेन्दु जी ने निबन्ध के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करने के लिए पत्रिकाओं का प्रकाशन कराया। भारतेन्दु के साथ ही उस युग में ऐसे अनेक प्रतिभाशाली साहित्यकार सामने आये जिन्होने अपनी प्रखर प्रतिभा एवं अटूट लगन से उनके कार्य में योगदान करते हुए आधुनिक हिंदी साहित्य की नीव को दृढ़ता प्रदान की। उनका परिचय इस प्रकार है।

'पं0 बालकृष्ण भट्ट' ने हिन्दी प्रदीप' मासिक पत्रिका प्रकाशित की। इनके निबंध इसी पत्रिका में प्रकाशित होते रहे।

'पं0 प्रताप नारायण मिश्र' ने 'ब्राह्मण' नामक मासिक पत्रिका का संपादन किया और इस पत्रिका में गंभीर और सामान्य विषयों पर बड़े उत्कृष्ट निबंध प्रस्तुत किये।

बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की गणना हिंदी के प्रथम संपादक–आलोचक के रूप में की जाती है। इन्होने 'नागरी नीरद' और 'आनन्द कादम्बिनी' नामक पत्रिकाओं का सम्पादन किया और नाटक तथा निबंध लिखा।

बाबू बालमुकुन्द गुप्त भारतेन्दु मण्डल के अंतिम प्रतिभावान साहित्य साधक थे इनके संपादन एवं निबंधकार रूप का उत्कर्ष 'भारत मित्र' और 'वंगवासी' पत्रो में मिलता है। इन्होने 'वंगवासी' के माध्यम से भाषा गढ़ने की टकसाल का कार्य किया।

भारतेन्दु युग के पश्चात् आचार्य पं0 महावीर प्रसाद द्विवेदी के 'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादन भार ग्रहण करते ही हिन्दी गद्य शैली के परिमार्जन काल प्रारम्भ हो गया। आचार्य द्विवेदी ने अपनी पत्रिका के द्वारा भाषा परिमार्जन का महत्वपूर्ण कार्य किया और खड़ी बोली गद्य की प्रौढ़ शैली का स्वरूप निश्चित किया। इन्होनें गद्य साहित्य का कलेवर भी बढ़ाया। प्रौढ़ लेखकों के साथ ही लेख्य विषयों की भी वृद्धि हुई। साहित्यिक आलोचना का एक प्रकार से जन्म द्विवेदी युग में ही हुआ। आचार्य द्विवेदी ने 'सरस्वती' के द्वारा हिंदी गद्य का रूप स्थिर किया। उन्होने केवल उच्चकोटि के विद्वानों को ही सरस्वती में स्थान देकर उसको आदर्श बनाया। यहाँ तक कि वें किसी लेखक की भाषा में त्रुटियाँ देखकर उसके लेख को स्वयं परिमार्जित भाषा में लिखकर छापते थे। अपने सम्पादन काल में खड़ी बोली गद्य का संस्कार किया और हिंदी को नवीन प्रौढ़ शैली प्रदान की। जिस प्रकार द्विवेदी जी ने सरस्वती के माध्यम से पत्रकारिता को नवीन दिशा प्रदान की उसी प्रकार 'इन्दु' के माध्यम से पंडित रूपनारायण पांडेय ने संपादकीय सर्तकता, अध्यवसाय, और ईमानदारी का आदर्श हमारे समक्ष प्रस्तुत किया।

1901 में प्रकाशित होने वाले पत्रों में चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का समालोचक महत्वपूर्ण है। इस पत्र का दृष्टिकोण आलोचनात्मक था और इसी दृष्टिकोण के कारण वह पत्र चर्चित भी रहा।

1905 में काशी में 'भारतेन्दु' पत्र का प्रकाशन हुआ। यह पत्र भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की स्मृति में निकाला गया। ''जयमंगल करै' के उदघोष के साथ इस पत्र ने संसार की भलाई करने का महत् उदेश्य अपने सामने रखा परंतु लंबे समय तक इसका प्रकाशन नही हो सका।

1907 का वर्ष समाचार पत्रों की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा। महामना मालवीय ने 'अभ्युदय' का प्रकाशन किया वहीं बाल गंगाधर तिलक के 'केसरी' के तर्ज पर माधवराव सप्रे ने हिंदी केसरी का प्रकाशन किया।

1910 में गणेश शंकर विद्यार्थी ने प्रताप का प्रकाशन किया। यह पत्र उग्र एवं क्रांतिकारी विचारधारा के पोषण पत्र स्वाधीनता के प्रसार के लिए प्रयास कर ही रहे थें, साथ ही साथ साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं ने अनेक लेख लिखकर जनता की सुप्त भावनाओं का दिशा निर्देशन किया।

छायावाद काल में अनेक पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। इस काल की प्रमुख पत्रिकायें इन्दु, प्रभा, चाँद, माधुरी एवं शारदा, मतवाला थी। सभी साहित्यकारों, प्रसाद, पंत, निराला महादेवी ने पत्रिकाएँ निकाली। इनमें अपने लेखों से साहित्यकारों ने जनजागृति का कार्य किया। 1909 में प्रसाद ने 'इन्दु' का संपादन किया। छायावाद का आरंभ इसी पत्रिका से हुआ। 'प्रभा' का प्रकाशन 1913 में हुआ। इसी पत्रिका ने माखन लाल चतुर्वेदी को जगत् के समक्ष प्रस्तुत किया। 'चाँद' का प्रकाशन 1920 में हुआ आरंभ में यह साप्ताहिक पत्र था परन्तु बाद में मासिक हो गया। इसमें सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक विषयो पर लेख प्रकाशित होते थे।

1921 के बाद हिंदी पत्रकारिता का समसामायिक युग आरंभ होता है। इस युग में हम राष्ट्रीय और साहित्यिक चेतना को साथ–साथ पल्लवित पाते हैं। इसी समय के लगभग हिंदी का प्रवेश विश्वविद्यालयों में हुआ और कुछ ऐसे कृति संपादक सामने आज जो अंग्रेजी पत्रकारिता से पूर्णतः परिचित थे और जो हिंदी पत्रों को अंग्रेजी, मराठा और बंगला के पत्रों के समकक्ष लाना चाहते थे। फलतः साहित्यिक पत्रकारिता में एक नए युग का आरंभ हुआ। राष्ट्रीय आदोलनों ने हिंदी की राष्ट्रभाषा के लिए योग्यता पहली बार घोषित की और जैसे–जैसे राष्ट्रीय आंदोलनों का बल बढ़ने लगा, हिंदी के पत्रकार और पत्र अधिक महत्व पाने लगे। 1921 के बाद गांधीजी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आंदोलन मध्यवर्ग तक सीमित न रहकर ग्रामीणों और श्रमिकों तक पहुँच गया और इसके प्रसार में हिंदी पत्रकारिता ने महत्वपूर्ण योगदान किया। सच तो यह है कि हिंदी पत्रकार राष्ट्रीय आंदोलनों की अग्र पंक्ति में थे और उन्होने विदेशी सत्ता से डटकर मोर्चा लिया। विदेशी सरकार ने अनेक बार नये–नये कानून बनाकर समाचार पत्रो की स्वत्रंता पर प्रहार किया परंतु जेल, जुर्माना और अनेकानेक मानसिक और आर्थिक कठिनाइयाँ झेलते हुए भी हिंदी पत्रकारों ने स्वतंत्र विचार की दीपशिखा जलाए रखी।

1921 के बाद साहित्य क्षेत्र में जो पत्र आए उनमें प्रमुख हैः–

स्वार्थ 1922, माधुरी 1993, मर्यादा, चाँद 1923, मनोरंमा 1924, समालोचक 1924, चित्रपट 1925, कल्याण 1926, सुधा 1927, विशालभारत 1928, हंस 1930, गंगा 1930, विश्वमित्र 1933, रूपाभ 1936, साहित्य संदेश 1938, कमला 1939, मधुकर 1940, जीवन साहित्य 1940, विश्वभारती 1942, संगम 1942, कुमार 1944, तथा नया साहित्य 1945, पारिजात 1945, हिमालय 1946 आदि।

'माधुरी' का प्रकाशन 1921 में हुआ यह छायावाद की प्रमुख पत्रिका थी। माधुरी के मुख पृष्ट पर दुलारे लाल भार्गव का यह दोहा प्रकाशित होता था।

सिता, मधुर मधु, सुधा तिय अधर माधुरी धन्य।
पै नव रस साहित्य की यह माधुरी अनन्य।।

1922 में रामकृष्ण मिशन से जुड़े स्वामी माधवानन्द के संपादन में 'समन्वय' का प्रकाशन हुआ। यह मासिक पत्र था। निराला की सूझ–बूझ और उनके पाण्डित्य का यह उत्कृष्ट उदाहरण यह पत्र है। आचार्य शिव पूजन सहाय और निराला ने विभिन्न विषयों पर लेख लिखकर इस पत्रिका को जन सामान्य तक पहुँचाया। निराला ने हिंदी भाषा सीखने के लिए 'सरस्वती' पत्रिका को आधार बनाया।

1923 में निकलने वाला 'मतवाला', निराला की भाँति निराला ही था। इस पत्र के संपादक महादेव प्रसाद शेठ थे। परन्तु जिम्मेदारी, शिव पूजन सहाय, निराला पांडेय बेचन शर्मा उग्र पर थी। हास्य व्यंग्य, विनोद का प्रयोग करके नई चेतना इस पत्र ने फैलाई। यह जगत की मतवाला अपने युग की साहित्यिक योजनाओं को शीर्ष पर पहुँचाने वाला प्रमुख पत्र था। 'सुधा' 1927 में प्रकाशित हुआ। इस पत्र का उद्देश्य बेहतर साहित्य एवं लेखकों को प्रोत्साहन देना था। निराला के आगमन से यह उद्देश्य सफल होता रहा।

छायावाद की पत्रकारिता इस दृष्टिकोण से सर्वाधिक महत्वपूर्ण थीं भाषा का एक नया संस्कार और भाषा में कोमलता एवं प्राजंलता लाने का श्रेय इन्ही पत्रिकाओं को है। एक और इन्ही पत्रिकाओं के माध्यम से स्वच्छन्दतावाद की स्थापना हुई वहीं सामाजिक राजनैतिक घटनाओं को स्वर मिला। अनेक सुंदर कविताओं का प्रकाशन इस युग की पत्रिकाओं में हुआ। 'जूही की कली', 'सरोज–स्मृति', 'बादल–राग' जैसी निराला की उत्कृष्ट कविताएँ मतवाला में प्रकाशित हुई।

'चाँद' पत्रिका में महादेवी वर्मा का अधिकांश साहित्य प्रकाशित हुआ। छायावाद के प्रसिद्ध रचनाकारों में से पन्त वे 'रूपाभ' का प्रकाशन किया।

प्रेमचन्द ने 1932 में 'जागरण' और 1936 में 'हंस' का प्रकाशन किया। 'हंस' का उद्देश्य समाज का आह्वान करना था। 'हंस' 'साहित्यिक पत्रिका थी जिसमें साहित्य की विविध विधाओं का प्रकाशन किया जाता था। प्रेमचन्द के पश्चात् शिवरानी देवी, विष्णुराव पराडकर, शिवदान सिंह चौहान, जैनेन्द्र, अमृतराय ने इसका संपादन किया। बाद में 'हंस' को नये रूप में नए आदर्श–यथार्थ के समन्वय करके नए ज्वलंत प्रश्नो के साथ राजेन्द्र यादव द्वारा इसका संपादन किया गया। अब इसका प्रमुख स्वर किसान, दलित एवं स्त्री पीड़ा का है। शोषित वर्ग की आवाज हंस मे देखी जाती है। हिन्दी पत्रिकारिता के उत्कर्ष का समय आया। 1947 में देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। जनसामान्य मे नवीन उत्सुकता का संचार हुआ। स्वतंत्रता के पश्चात् विभिन्न

घटनाक्रमों के साथ आपातकाल भी आया जब समाचार पत्रों की स्वतंत्रता प्रतिबन्धित हो गई थी। वह समय भी बीता परन्तु पत्रकारिता को एक व्यापार बना गया। इसी क्रम में आज पत्र–पत्रिकाएं मुख्यतः तीन बातों पर ध्यान दे रही है।

1– साहित्यिक अभिरूचि का विकास 2– राजनीतिक सूचनाओं में अभिवृद्धि 3– सांस्कृतिक एवं मनोरंजक सूचनाएँ

इसके अतिरिक्त खेल, शिक्षा और कैरियर संबंधी दिशाएँ सुझाने का कार्य भी पत्रों के द्वारा किया जा रहा हैं। इसके अतिरिक्तांक या विशेषांक भी निकाले जाते है। जिनमें साहित्य संस्कृति, ज्ञान, विज्ञान, खेल कृषि जनसंख्या, समसामायिकों आदि विषयों पर पूर्ण जानकारी उपलब्ध होती है।

इसके अतिरिक्त आजकल प्रत्येक दिन सामचार पत्र के साथ कोई विशेष अकंभी आता है। जिसमें अलग–अलग दिन, अलग–अलग विषयों के लिए निर्धारित रहते हैं अनेक उत्कृष्ट साहित्यिक पत्र पंत्रिकाओं का प्रारंभ धर्मयुग, उत्कर्ष, ज्ञानोदय नए पत्ते, पाटल, प्रतीक निकष से हुई जो अब तक कादम्बिनी, नया ज्ञानोदय सरिता, आलोचना, इतिहास बोध, हंस, आजकल तक विकसित हो रही हैं यद्यपि अनेक पत्रिकाएँ प्रसिद्ध व स्थापित नामों को महत्व देती हैं। परन्तु नवीन उभरती पत्रिकाएँ नए नामों और नए विचारों को भी प्रोत्साहन दे रही हैं। कथन, कथादेश, स्त्री मुक्ति, अनभैसांचा आदि अन्य महत्वपूर्ण पत्रिकाएँ है।

पत्र पत्रिकाओं में नवीन विचारों और मान्यताओं को प्रश्रय मिलने के कारण भाषा व शिल्प में भी लचीलापन आया हैं कविताओं में छंदबद्धता के प्रति आग्रह टूटा है। नित नई कहानी व कविता प्रतियोगिता आयोजित की जाती हैं और उससे जुड़े रचनाकारों को सम्मानित भी किया जाता हैं।

अनेक पत्र पत्रिकाएँ तो किसी विशेष विधा को केन्द्र में रखकर ही कार्य कर रही है। इससे इस विधा का विकास तो होता ही है साथ ही पाठकों को भी रूचि के अनुरूप चयन की सुविधा भी मिल जाती है। उदाहरणार्थ 'रंग प्रसंग' पत्रिका राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय द्वारा निकाली जाती है। 'नटं रंग' भी नाट्य जगत की सुप्रसिद्ध पत्रिका है। आजकल के महत्वपूर्ण समाचार पत्रों में 'हिन्दुस्तान' हैं यह 1936 से प्रकाशित हो रहा है। इसमें भी साहित्य जगत से संबंधित लेख प्रकाशित होते रहते है। मृणाल पाण्डे साहित्य जगत से लंबे समय से जुडी रही है। वह बाल पत्रिका 'नदं न' से लेकर कादम्बिनी का संपादन करती है ऐसे में हिन्दुस्तान के साथ जुड़कर उन्होने हिन्दुस्तान को साहित्य से संबंधित सामग्री उपलब्ध कराई है।

'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' (1950) ने हिन्दी भाषा की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'धर्मयुग' एक उत्कृष्ट साहित्यिक पत्रिका थी। जिसे निकालने में 'इलाचंद जोशी, सत्यदेव विद्यालंकार और डॉ0 धर्मवीर भारती की महत्वपूर्ण भूमिका थी। इसमें जनता की रूचि को परिष्कृत रूप देने के लिए उच्च कोटि का साहित्य प्रकाशित किया जाता। 'वीर अर्जुन' (1954) में गंभीर साहित्यिक पत्रकारिता के दर्शन होते है।

भारतीय अमरीकी सहयोग से आरंभ की गई 'अन्यथा' नामक पत्रिका अमेरिका से निकाली जाती है। स्त्री की पीड़ा को आधार बनाती यह पत्रिका प्रवासी भारतीयों को जोड़ती है। 'कसौटी' के कुल 15 अकं प्रकाशित हुए। वित्तीय कारणों से इसे बंद करना पड़ा। साहित्य की विभिन्न विधाओं के प्रकाशन में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

'इतिहास बोध' पत्रिका भी आर्थिक संकट से जझू रही है परन्तु इसके सभी अकं ो में साहित्यिक, विवचने उत्कृष्ट रूप से दिखाई पड़ती है।

'अहा जिन्दगी' नामक पत्रिका में भी साहित्यिक क्षेत्र के विवेचन का प्रयास किया गया। 'भाषा' नामक पत्रिका भारतीय भाषाओं एवं साहित्यिक क्षेत्र की महत्वपूर्ण पत्रिका है। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा और उच्चतर शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका डॉ0 शशि भारद्वाज के संपादन में प्रकाशित की जाती है, भाषा और अनुवाद, भाषा और कम्प्यूटरीकरण भाषा और भाषा प्रौद्यौगिकी, सूचना एवं साहित्य, साहित्य एवं विज्ञान जैसे मुद्दो पर विचार करना इसका महत्वपूर्ण कार्य हैं।

अंत में कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में पत्र पत्रिकाओं ने उतार चढाव का सामना करते हुए भाषा और विषय को परिपक्व किया है व अपनी सार्थक एवं सशक्त उपस्थिति दर्ज की है। यही उसके विकास का परिणाम साबित हुआ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिंदी साहित्य का इतिहास–रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी पत्रकारिता स्वरूप और सन्दर्भ–डॉ विनोद गोदरे
3. हिंदी पत्रकारिता का आलोचनात्मक इतिहास
4. हिंदी पत्रकारिता के विविध आयाम–वेदप्रताप वैदिक
5. समाचार पत्रों का इतिहास
6. मीडिया की बदलती भाषा–डॉ. अजय कुमार सिंह
7. साहित्यिक पत्रकारिता–ज्योतिष जोशी
8. पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य–जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी
9. हिंदी पत्रकारिता और स्वतंत्रता संग्राम डॉ. कृष्ण देव अरविंद
10. हिंदी पत्रकारिता का इतिहास–मिनाक्षी सिंह
11. पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार माध्यम–संजीव मनावत